लब्धिवीर्य–करणवीर्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

वीर्य का अर्थ है शक्ति। मनुष्य के मन में अनेक विचार आते जाते रहते हैं। किन्तु यदि उसके पास शक्ति न हो तो वह कार्य नहीं कर सकता। बिना शक्ति के कार्य नहीं किया जाता। गाड़ी में पेट्रोल या डीजल ना रहें तो इंजन में शक्ति होते हुए भी वह कैसे कार्य करेगा। बिना एनर्जी के कोई कार्य नहीं होता। पूरा ब्रहमाण्ड शक्ति से संचालित हो रहा है। एनर्जी कभी नष्ट नहीं होती उसका केवल रूपान्तरण होता है। लब्धिवीर्य आत्मा की शक्ति है। करणवीर्य शरीर की शक्ति है। शरीर की शक्ति अर्थात करणवीर्य से मन, वचन और काया का संचालन होता है। शरीर को चलाने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। इस शक्ति को करणवीर्य कहते हैं।

प्राण वायु आत्मा आदि के सहयोग से शरीर को शक्ति मिलती है। प्राण ऊर्जा के संरक्षण से शरीर शक्तिशाली बनता है। यदि काम वासना में इस शक्ति को लगाया जाता है तो यह शक्ति क्षीण हो जाती है। साधु–संन्यासी, योगी, महात्मा इस शक्ति को नष्ट नहीं करते। इसलिए उनके शरीर में करणवीर्य अधिक होता है। इस वीर्य को संरक्षण करने से प्राण वायु शक्ति सम्पन्न बनती है। ज्ञानी लोग करणवीर्य को सहस्रार में ले जाकर कुण्डलिनी जागरण करते हैं इससे उनका ज्ञानतंत्र सक्रिय हो जाता है। आत्मा का तेज बढ़ता है।

शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम् अर्थात शरीर ही धर्म का पहला साधन है। यदि शरीर स्वस्थ रहता है तभी आत्म साधना की जा सकती है। स्वयं को जानने के प्रयास करना चाहिए। हम बाहर की दुनिया को अधिक जानते हैं किन्तु अपने को जानने का प्रयास नहीं करते। जब तक हम स्वयं को नहीं जानेगे तब तक कल्याण नहीं हो सकता। जो अपने को जान लेता है वह सब कुछ जान लेता है। अपने को जानने का मतलब है अपने को शक्ति सम्पन्न करना। शक्ति सम्पन्न व्यक्ति सब कुछ कर सकता है। पुरुषार्थ अपने को जानना है। शरीर और आत्मा भिन्न–भिन्न हैं। आत्मा अजर, अमर और अविनाशी है किन्तु शरीर नश्वर है। मनुष्य की

आत्मा सबसे विकसित है। मनुष्य जीवन बहुत दुलर्भ है। लब्धिवीर्य यानी आत्मा की शक्ति ने करोड़ों सूर्य के प्रकाश से अधिक शक्ति है। आत्मा के कारण ही शरीर शक्ति सम्पन्न बनता है। यदि आत्मा न रहे तो शरीर कार्य नहीं कर सकता। लब्धिवीर्य के कारण ज्ञाता दृष्टा भाव जागृत होता है। आत्मा शक्ति का केन्द्र है। आत्मा में अनन्त शक्ति है। उस शक्ति को योग साधना के द्वारा जागृत करना चाहिए। जिस योगी ने अपनी इस शक्ति को जागृत कर लिया है वह महान आत्मा बन जाता है।

आत्मा सनातन सत्य है। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाउंगा? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए आत्मचिन्तन करना पड़ता है। इन प्रश्नों का समाधान बाह्य जगत में नहीं बल्कि आन्तरिक जगत में खोजना पड़ता है। मैं कौन हूँ? जब यह प्रश्न उपस्थित होता है तो आत्मा की सत्ता सामने आ जाती है। शरीर आत्मा नहीं है। शरीर जड़ पदार्थ है। मैं शब्द के द्वारा जिसका बोध होता है वही आत्मा है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। शरीर विनासशील है और आत्मा अविनाशी। शरीर को चलाने वाला आत्मा ही है।

यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है, जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते है। आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन कि क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक–पृथक हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं। शरीर भौतिक तत्वों से बना है। चेतनतत्व इसे संचालित करता है। यदि चेतनतत्व न रहे तो शरीर नष्ट हो जायेगा। आत्मा हर प्राणी में होती है। शरीर के नष्ट होने पर आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में अपने कर्म के अनुसार चली जाती है। जड़तत्व इस ब्रह्माण्ड में रहता है। जब तक कार्मण शरीर का आत्मा से संबंध रहता है, तब तक जीव को शरीर धारण करना पड़ता है। जब आत्मा कर्मों से मुक्त होती है तो वह मोक्ष को चली जाती है। संयोग, वियोग, सुख, दुःख चलता रहता है।

आत्मसाक्षात्कार के द्वारा जीव मुक्त होता है। इस संसार में अनेक विद्यायें हैं। किन्तु आत्मविद्या सबसे बड़ी विद्या है। जिसको इस विद्या का ज्ञान हो जाता है, उसके लिए कुछ भी अज्ञात नहीं रहता है। जिसने इस विद्या को जान लिया वह सबकुछ जान लेता है। इसलिए कहा गया है– जे एगं जाणइ ते सव्वं जाणइ अर्थात् जो एक को जान लेता है, वह सबको जान

लेता है। आत्मा ही एक ऐसा तत्व है, जिसको जान लेने के बाद सबकुछ जान लिया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि आत्मतत्व को जाना कैसे जाये।

आत्मतत्व के ज्ञान की अनेक विधियां बताई गयी है। राग–द्वेष रहित होकर आत्मतत्व की प्रेक्षा करने से आत्मतत्व का दर्शन होता है। आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत सुख का स्रोत है। मानव भौतिक सुखों के प्रति आकृष्ट होकर जीवनभर उसी में लिप्त रहता है और इसी को बहुत बड़ा सुख मानता है। अंदर सुख भंडार इतना विशाल है कि उसका ज्ञान हो जाने पर उसका स्रोत निरंतर प्रवाहित होता रहता है। परमार्थ के मार्ग पर चलने के लिए स्वयं को जानना आवश्यक है। जो आत्मज्ञानी होता है, उसके लिए सम्पूर्ण पृथ्वी ही अपना परिवार होती है। लब्धिवीर्य और करणवीर्य से पूर्णता आती है।